(अनूदित कहानी)

दोन्यी पोलो एक्सप्रेस

(अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद)

मूल रचना: अजन्ता

अनुवादक: माधुर्ज्य कमल हाजरिका

जब भी मैं रेलगाड़ी से यात्रा करने का मन बनाती हूँ, एक मनमोहक रेलगीत मेरे भीतर गूंजने लगती है, जो अपनी धुन, सामंजस्य या लय खोए बिना जारी रहती है। कभी-कभी मैं उस अनुभव को इन गीतों के माध्यम से व्यक्त करती हूँ....'जगबंधु फटसति', कभी 'रेल ओ रेल दीघे लेलपेल', या कभी-कभी उन प्रसिद्ध रचनाओं के रूप में... 'प्रथम नोहोय द्वितीयो नोहोय तृतीया श्रेनिर जात्री आमी जिबोन रेलोर डोबाट'..., 'द बर्निंग ट्रेन', 'हम दोनों दो प्रेमी दुनिया छोड़ चले' और भी कुछ-कुछ। ट्रेन में चढ़ते समय मैं इन मधुर संगीतों को अपने अंदर महसूस करती हूँ। इसीलिए उस रोज मैंने पूरा दिन लगाकर अपना सब काम पूरा किया और शाम पांच बजे अपने कार्यालय के वाहन से रेलवे स्टेशन के लिए निकल पड़ी। रास्ता खाली होने के कारण वहां पहुंचने में सिर्फ आधा घंटा लगा। स्टेशन पर पहुंचकर मैंने देखा वह भव्य रूप से सजी-धजी यात्रा के लिए तैयार है।

वह ऐसे चमक रही थी मानों अभी-अभी नहाकर आई है। होंठों में हल्की मुस्कान और आँखों में मित्रतापूर्ण दृष्टि लेकर मैंने उसकी ओर अपना हाथ हिलाया। उसने भी पलटकर जवाब दिया, मानों मेरी दोस्ती उसे भी एक अपनापन महसूस कराती है। मैं दिन भर के काम में जुटे होने के कारण काफी थक गई थी। सुबह स्नान करके चेहरे पर थोड़ा-सा क्रीम लगाया था, जो अब तक धूल एवं पसीना से लड़ते-लड़ते अपना रौनक खो चुकी थी। अपने थकान को दूर करने के लिए मैंने स्टेशन में ही एक नल खोलकर और अपने वैनिटी बैग से एक फेसवॉश क्रीम निकालकर अपना चेहरा धोया और तौलिया निकाल कर पोंछने लगी। फिर मैंने अपने चेहरे पर थोड़ी-सी क्रीम लगाई और होंठों पर हल्के लिपस्टिक। कंघी से उलझी हुई बालों को थोड़ा सुलझाती रही थी कि एक चाय वाला लड़का मेरे पास ऐसे आया मानों वह मेरी मनस्थिति भांप लिया हो। मैंने एक कप गर्म चाय और एक पफ बिस्किट से अपने मन को शांत किया। गर्म चाय से थकान मिटने का अहसास हुआ और अब खुद को तरोताजा महसूस कर रही थी। मैं चाय वाले लड़के की ओर देखकर मुस्कुरायी। मैंने सोचा कि थोड़ा टहल लिया जाए। मेरा ट्रॉली बैग बिल्कुल भी भारी नहीं था। मैं ट्रॉली खींचते हुए चलने लगी। नाहरलगुन रेलवे स्टेशन की खूबसूरती अलग ही है, जो चारो तरफ से ऊँची-ऊँची पहाड़ियों से घिरा हुआ यह हमारे अरुणाचल प्रदेश का पहला रेलवे स्टेशन है। यह स्टेशन हम सबके लिए परिवार की पहली बेटी जैसा प्यारा है।

साल के किसी भी मौसम में इस रेलवे स्टेशन की खूबसूरती कभी म्लान नहीं होती। मैंने अपने मोबाइल फोन के कैमरे से आस-पास की हरी-भरी सुंदरता को रिकॉर्ड करना शुरू कर दिया। यात्रियों की भीड़ पहले से ही स्टेशन में मौजूद थी। वास्तव में यात्रियों से ज्यादा उनके रिश्तेदार और मित्र अधिक संख्या में रेलवे स्टेशन पर आये हुए थे। प्रत्येक यात्री के साथ लोगों का एक समूह था। इनमें से ज्यादातर सेल्फी और वीडियो लेने में व्यस्त

थे। मेरी ओर कोई नहीं देख रहा था, पर मैं एक अनजान ख़ुशी अपने मन में लिए सबको देख रही थी। यात्रा की अंतिम घोषणा एक मधुर महिला की आवाज से हुई, "यात्रीगण कृपया ध्यान दें, ट्रेन संख्या 15618, नाहरलगुन-गुवाहाटी, दोन्यी पोलो एक्सप्रेस प्लेटफार्म नंबर एक से छह बजकर पैंतालीस मिनट पर रवाना होगी।" मैंने आखिरी बार अपने मोबाइल फोन पर अपने आरक्षण विवरण की पुष्टि की-पीएनआर नंबर देखा। बोर्डिंग स्टेशन NHLN से VNE तक आरक्षित, यानी नाहरलगुन से विश्वनाथ चारियाली तक, स्लीपर क्लास, बुकिंग स्थिति CNF, यात्री का नाम, सीट S2 /52 निचली बर्थ पर। रेलवे प्लेटफार्म पर वह घोषणा हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में कई बार दोहराई गई। डिब्बों के दरवाज़े खुले हुए थे। लाइटें लगाई गईं। यात्रियों में अंदर जाने की होड़ मच गई, मैं भी अंदर गयी। बोर्डिंग से ठीक पहले मैं फिर से उसकी ओर देखकर मुस्कुरायी। अब वह यात्रा के लिए तैयार थी। मंच पर प्रदर्शन के लिए तैयार एक सुंदर नर्तक की तरह सतर्क और हँसमुख।

कुछ ही देर में पश्चिमी हवा की तरह वह अपनी नाजुक लेकिन तेज़ चाल के साथ अपनी यात्रा शुरू कर देगी। उसकी अनियंत्रित गति को कौन रोक सकता है? मैं S2 डिब्बे में चढ़ गयी और अपनी आवंटित बर्थ को तलाशने लगी। सीट मिलने पर पास की खिड़की खोलकर मैंने आराम से खुद को सीट पर एडजस्ट किया। प्रस्थान करती रेल की सीटी आस-पास की पहाड़ियों के बीच गूँज रही थी। मेरे दिल के अंदर कुछ सिहर उठा। जब भी मैं यह सीटी सुनती हूं, अपने अंदर छुपी हुई उस उमंग के पक्षी को निकट से महसूस करती हूँ, जो अपने कंपन से मुझे हर बार झकझोर देती है। रेल की इस सीटी की आवाज से शायद हर किसी की भावनाएं जुड़ी होती हैं। शायद रेल उन्हें अपनों से दूर ले जाने के लिए ही सीटी बजाती है। रेल की गति वाली यह गीत मधुर धुन से शुरू होकर धीरे-धीरे तेज होती चली गई। यह धुन मेरे शरीर और मन के साथ एकाकार हो गई थी। ऐसा ही कुछ अन्य यात्रियों के साथ भी हुआ होगा। मैं खिड़की से बाहर की तरफ देख रही थी। रेल से बाहर की दुनिया एवं मनमोहक प्रकृति की सुंदरता को मैं एक पल के लिए भी छोड़ना नही चाहती थी। मैं जिन दृश्यों को देख रही थी उन्हें अपनी दोनों आंखों से अपने दिलोदिमाग में दर्ज भी करती जा रही थी।

रेलवे पुलिस कर्मी मुझे चेतावनी देने के लिए दो बार मेरे पास आये।

'मैडम, खिड़की बंद कर दीजिए... कभी-कभी बाहर से कोई पत्थर फेंक देते हैं।'

मैंने उसे अनसुना किया पर अंत में एक बार मुझे जवाब देना पड़ा,

'ज्यादा चिंता की कोई बात नहीं. अगर मैं खिड़की बंद कर दूं तो मैं इस मनमोहक प्रकृति को नहीं देख पाउँगी।'

वह एक सज्जन व्यक्ति थे, उन्होंने कुछ नहीं कहा। मैं परेशान हो गयी लेकिन, कोई पत्थर क्यों फेकेगा? ट्रेन ने किसी का क्या बिगाड़ा है? जिन लोगों को चलती ट्रेन पर पत्थर फेंक कर मजा आता होगा, उनके दिमाग में जरूर कुछ खराबी होगी। तीसरी बार में उसने खुद ही खिड़की बंद कर दी। मैंने भी एक नम्र और शांत लड़की की तरह इसे स्वीकार कर लिया और चुपचाप बैठी रही। खिड़की बंद करते ही मैंने सहयात्रियों की ओर देखा। कभी-कभी मुझे हारमोती स्टेशन तक डिब्बे में अकेले ही सफर करना पड़ता है। लेकिन आज ट्रेन में बहुत भीड़ थी। सभी यात्री उदास भाव से बैठे हुए थे। ऊपरी बर्थ पर दो व्यक्ति अपने मोबाइल फोन में व्यस्त थे। मेरे साथ बैठी दो कैथलिक नन आपस में अंग्रेजी में बातचीत कर रही थी। बातचीत के दौरान वे कभी-कभी अपनी गर्दन से लटकते क्रॉस को छू लेती थी। भारतीय सेना का एक जवान साइड बर्थ पर था। उसने मेरी ओर देखा और

मुस्कुराया, मैंने भी एक हल्की मुस्कराहट के साथ उसे जबाब दिया। रेल कि इस बहुमूल्य यात्रा को मैं व्यर्थ नहीं जाने दे सकती। मैंने किताब पढ़ते हुए इस समय का अच्छा उपयोग करना चाहा। मैंने अपने बैग से आधा पढ़ चुकी एक उपन्यास निकाला, और एक-एक करके पन्ने पलटने लगी। चलती ट्रेन में आंखों को राहत देने के लिए कुछ मिनट पढ़ने के बाद इधर-उधर देखना जरूरी है। इसके अलावा, मेरे लिए ट्रेन के अंदर एक अलग दुनिया मौजूद थी, इसका भी मुझे आभास हो रहा था। इसमें विभिन्न लोग शामिल हैं, चाहे वे किसी भी जाति, पंथ और धर्म के हों, जैसे फेरीवाले, चाय वाले-मिठाई वाले, चना-बादाम वाले, हिजड़े, सफ़ाई करने वाले बच्चे, महिलाएं और अलग-अलग सक्षम व्यक्ति जो पैसे मागने आते हैं आदि। इतने सारे लोगों का घर, उनकी जिंदगी, उनकी दुनिया बस इसी रेल तक ही सीमित है। ये डिब्बे कितने ही लोगों की आजीविका का साधन है। रेल के अंदर की ये दुनिया मेरे लिए हमेशा एक रहस्य रही है। मुझे इसे आत्मसात करना अच्छा लगता है। रेल में ये स्लीपर और जनरल क्लास देश का आईना है। यह मध्यम वर्ग की वास्तविक तस्वीर है। मध्यवर्गीय परिवारों से भरे हुए इस देश को समझने के लिए किसी को भी एक बार स्लीपर क्लास में यात्रा करनी चाहिए। मैंने पन्नों से नज़र उठाकर डिब्बे में मौजूद एक-एक यात्रियों की ओर देखा। ऊपरी बर्थ पर बैठे दोनों लोग अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी समुदाय से थे। माना जा सकता है कि ये दिल्ली, बेंगलुरु या चेन्नई में पढ़ने वाले छात्र हैं। शक्ल-सूरत से वे भगवान बुद्ध की भूमि पश्चिम कामेंग या बोमडिला, तवांग तरफ के लग रहे थे। बौद्ध धर्मी लोग शांति के देवदूत हैं। दूसरी ओर एक लड़की है। इसमें कोई शक नहीं कि वह आबोतानी बेल्ट से ताल्लुक रखती है। यानी वह पश्चिमी अरुणाचल की एक आदिवासी लड़की थी। उसने एक बार भी अपने मोबाइल फोन से नजरें नहीं हटाई। ऐसा लग रहा था जैसे किसी तेज़ तूफ़ान के कारण उसका संपर्क बाहर से कट गया हो। वह छोटे से मोबाइल फोन के अंदर छुपी रहस्यमयी दुनिया की नागरिक थी।

डिब्बे के अन्य सहयात्री, रेल की गति के कारण सुनाई देता यह मजेदार गाना और वे लोग जिनकी जिंदगी ट्रेन से शुरू हो ट्रेन में ही ख़त्म होती है, ये सब उस लड़की के भावनाओं का हिस्सा नहीं थे। मेरे सामने एक मुस्लिम व्यक्ति बैठे हुए थे। उनकी पोशाक से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वह पांच वक्त नमाजी होंगे। उन्होंने एक किताब खोली और छोटी-छोटी आवाजें निकालते हुए पढ़ने लगे। दोनों मिशनरियों ने भी दो किताबें निकालीं और पढ़ने लगी। चाँदी के क्रॉस चुपचाप उनके छाती के ऊपर पड़े रहे। मैंने सोचा कि वे सब मेरे द्वारा किये गए कार्यों का अनुसरण करते हुए किताबें पढ़ रहे थे। यह लगभग एक सुखद संक्रमित रोग की तरह है। मैं खुशी से मुस्कुराई। सेना का जवान अपने ख्यालों में खोया हुआ था। हो सकता है कि वह किसी दूर स्थान पर छोड़े गए अपने परिवार के बारे में सोच रहा हो। वह बहुत ख़ूबसूरत था। लंबे कद और सुडौल शरीर के कारण और फब रहा था, मानों उसके देह से सौंदर्य की रश्मियाँ निकल रही हों। मैं फिर से किताब के पन्नों पर लौट आई।

नाहरलगुन से यात्रा शुरू करने वाली रेलगाड़ी गुमटू स्टेशन को पार कर असम में प्रवेश कर गई और हारमोती स्टेशन पर रूकी। मैंने फिर से खिड़की खोली और बाहर झाँका। हारमोती छोटे व्यवसायों के लिए एक सुविधाजनक स्थान है जो अरुणाचल प्रदेश से सटा हुआ है। इस स्टेशन पर काफी संख्या में रेलयात्री चढ़े। यात्री हल्ला मचाते हुए अपनी सीट तलाश रहे थे। मैंने खुली हुई खिड़की से बाहर देखा। यात्रियों के मित्रों और रिश्तेदारों की शुभकामनाएँ से भरे हुए विदाई के स्वर चारो ओर गूंज रहे थे....यात्रा मंगलमय हो। एक माँ अपने

पुत्र से स्नेहपूर्वक कह रही थी- "यात्रा मंगलमय हो, मेरे प्यारे बेटे, अपनी सेहत का ख्याल रखना, मुझे कॉल करना।" विदाई के इस पल में कुछ प्रेमी जोड़ों की आंखें विरह वेदना से भर जाती है। हमारी रेलगाड़ी पुनः एक लंबी सीटी के साथ हारमोती स्टेशन छोड़ने के लिए तैयार थी। पुनः महिला की वह आवाज गूंजने लगी- कृपया यात्रीगण ध्यान दें, ट्रेन नंबर 15618 नाहरलगुन-गुवाहाटी दोन्यी-पोलो एक्सप्रेस...फिर से रेलगाड़ी की तेज रफ़्तार वाला गाना शुरू हो गया। कुछ ही मिनट बाद रेलवे पुलिस आई और मुझसे बिना कोई बातचीत किए खिड़की इस तरह बंद कर दी, मानो उसे खिड़की के साथ अनंत काल से दुश्मनी हो। मैं फिर किताब के पन्नों पर लौट आयी। रेल अपने मदमस्त गाना को गाकर तेजी पकड़ रही थी। अगला स्टेशन गहपुर था। यहां रेल कुछ समय के लिए रूकती है। यात्रियों के साथ-साथ चना वाले-बादाम वाले भी यहां रेल में चढ़ते हैं। मैंने अन्य दिनों की तरह मूंगफली का एक पैकेट खरीदा। इतने में एक वृद्धा अपने लड़खड़ाते कदमों से डिब्बे के अंदर आयी, और सीट ढूंढ़ते हुए इधर-उधर देखने लगी। अचानक चुपचाप बैठे हुए यात्रियों में हलचल शुरू हुई। अनेक अनजान आवाजें चारों तरफ गूंजने लगी। एक ने उस वृद्ध महिला से पूछा...

'आपका क्या नंबर है?' (सीट संख्या)

वह वृद्धा सिर हिलाकर संदेश देती है कि उसे पता नहीं या हो सकता है कि उनके पास टिकट नहीं है। उनका इशारा किसी को समझ में नहीं आया। एक अन्य व्यक्ति ने कहा, "मुझे टिकट देखने दो"। इस बार भी वृद्धा सिर हिला देती है। इससे स्पष्ट हो गया कि उसके पास टिकट नहीं है। यात्रीगण परेशान नजर आने लगे थे, इतने में एक ने वृद्धा को दिशा दिखाकर कहा-

'तो फिर उस तरफ जाइये, आपको सीट मिलेगी।'

उसने ऐसे कहा मानो रेल का चप्पा-चप्पा वह जानता हो, मानो वह रेल के TTE या TTC की तरह कोई रेलवे अधिकारी हो। जब वृद्धा बैठने वाली थी तो यात्रीगण सोने की व्यवस्था करने लगे। दो सीटों के बीच की बर्थ को खोला गया। इस अवधि में मुझे कभी नींद नहीं आई। मैं केवल तीन घंटे के लिए यात्रा करती हूँ। एक बार मैंने दोनों मिशनरियों से अनुरोध किया कि "मैं बिश्वनाथ चारियाली में उतर जाऊंगी। क्या आप कृपया उसके बाद सोने की व्यवस्था कर सकती हैं?" उन्होंने मेरे इस अनुरोध को ठुकरा दिया और कहा- "माफ करें मैडम।" अगर बीच की सीट खुली हो, तो कोई निचली सीट पर नहीं बैठा जा सकता, अगर मैं उस जगह पर खुद को समायोजित करने के लिए गलत मुद्रा में बैठूंगी तो इससे मेरी गर्दन में दर्द होगा। यात्री किनारे की स्लीपर सीटें खोलकर अपना बिस्तर व्यवस्थित करने लगे। सैनिक जवान अब भी उदासीन बैठा हुआ था। मैंने उनसे कहा।

"श्रीमान! सुनिए"

"जी मैडम"

उसने जिज्ञासा भरी नजरों से मेरी ओर देखा। मैंने उन्हें हिंदी भाषी होने का अनुमान लगाते हुए हिंदी में ही पूछा। "आपको भी अभी सोना है क्या?" उन्होंने कहा, "नहीं। आप यहां बैठ सकती हैं मैडम।" मैं बहुत खुश हुई। मैंने अपनी सीट उसके बगल में ले ली। बूढ़ी महिला भी मेरी तरफ देखते हुए उसकी सीट पर बैठ गई। सेना का जवान मेरी तरफ देखकर मुस्कुराया। मैंने उस बूढ़ी औरत और सेना के जवान से बारी-बारी से बात करना शुरू किया। मेरी धारणा सही थी। वह एक हिंदी भाषी व्यक्ति था। मैंने उससे हिंदी में बातचीत शुरू की।

'आप सेना में जवान हो क्या?'

'हाँ, पैरा कमांडो रेजिमेंट...'

'पैरा कमांडो रेजिमेंट... वह क्या होता है?'

वह बहुत उत्साही होकर मुझसे कहा- पैरा कमांडो का गठन 1966 में हुआ था। पैरा कमांडो भारतीय सेना की उच्च प्रशिक्षित पैराशूट रेजिमेंट का हिस्सा है और भारत के विशेष बलों के सबसे बड़े हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है। भारतीय सेना की पैराशूट इकाइयाँ दुनिया की सबसे पुरानी हवाई इकाइयों में से एक है। वह हिंदी भाषी होते हुए भी फर्राटेदार अंग्रेजी बोल रहा था। वह छुट्टी पर आया था। उसकी बहन का परिवार ईटानगर में था। वह अपनी छुट्टी ख़त्म होने से पहले अपनी बहन से मिलने आया। बहन का पति भी सुरक्षाकर्मी है। वह केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में है, और अब सचिवालय में कार्यरत हैं।

'सचिवालय में? मैं भी वहीं काम करती हूँ।'

मैंने उत्साहपूर्वक कहा। तभी रेलगाड़ी के असली TTC अंदर आये। सभी ने उन्हें अपना टिकट दिखाया। उन्होंने वृद्धा को सामान्य डिब्बे में जाने को कहा। बुढ़िया ने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। वह बैठी रही। मैंने TTC से कहा-

'मैं विश्वनाथ चारियाली में उतरूंगी। क्या आप कृपया उस वृद्ध महिला को मेरी सीट पर बैठने देंगे?'

TTC ने उत्तर दिया,

'नहीं, सीट नंबर 52 विश्वनाथ से अन्य यात्री के लिए बुक है।'

'ओह! अच्छा ऐसा है।'

मैंने वृद्धा से पूछा कि वह कहाँ जायेगी। वृद्धा बोड़ो समुदाय की लग रही थी। वह असमीया तो समझती थी, लेकिन अच्छे से बोलने में असमर्थ थी। उसने केवल इतना कहा,

'रोंगिया..."

यह तो बड़ी दुविधा की बात है। दोन्यी पोलो एक्सप्रेस रात को करीब 2 बजे रोंगिया पहुंचेगी। बूढ़ी औरत अपने अस्थिर कदमों से कहाँ जायेगी? क्या उसे कोई स्टेशन से लेने आएगा? बिना टिकट अकेली उसे देखकर यकीन करना मुश्किल हो रहा था कि स्टेशन पर कोई उसे लेने आएगा। मैं उनके बारे में सोच कर बेचैन हो गई। मेरे पास भी उन्हें मदद करने का कोई रास्ता नहीं था। मेरी यात्रा केवल तीन घंटे की थी। यदि मेरी गुवाहाटी तक की बुकिंग होती तो मैं उस वृद्ध महिला के साथ बर्थ साझा कर सकती थी। मैं उस वृद्ध महिला के लिए एक रात की नींद त्याग कर सकती थी। ईश्वर ने मुझे इस त्याग से वंचित कर दिया। वह एक भयंकर जाड़े की रात थी। रेल सेवा स्लीपर क्लास में गर्म कंबल उपलब्ध नहीं कराते हैं। महिला एक पुरानी सूती मेखला चादर पहने हुए थी, जिसके ऊपर ओढ़ी हुई थी एक घिसा-पिटा स्वेटर, इस अवस्था में वह रात कैसे गुजारेगी?

अचानक डिब्बे के अंदर एक खाना वाला आया....खाना खाना...

सभी लोगों ने अलग-अलग आइटम का ऑर्डर किया। सेना के जवान ने मेरी तरफ देखा, मैंने उन्हें कहा कि मैं कुछ देर में घर पहुंच जाऊंगी, वहीं पर अपना भोजन करूंगी। उन्होंने मेरी इस बात को सराहा और उस वृद्ध औरत की ओर देखा। इस बार हम दोनों एक साथ जोर से हंसे क्योंकि बातचीत के दौरान हमें पता ही नहीं चला कि कब वह वृद्ध महिला उकडू बन सोने लगी थी। जवान ने एक प्लेट चावल और एक प्लेट रोटी ऑर्डर किया। पूर्णतः शाकाहारी व्यंजन। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि वह शाकाहारी था। मैं भी शाकाहारी हूँ। हम फिर से

बात करने लगे। मैंने उन्हें बताया कि मैं महीने में दो बार और सप्ताह के अंत में ईटानगर से अपने गृह नगर विश्वनाथ तक यात्रा करती हूँ। और ऐसी ही अनेक घटनाओं की साक्षी बनती रहती हूँ। जो प्रायः मेरे दिल पर असर डालती हैं। एक दिन इसी दोन्यी-पोलो एक्सप्रेस में मेरी मुलाकात एक विवाहित जोड़े से हुई, जो अपने पांच महीने के बच्चे के साथ दोईमुख से गुवाहाटी की यात्रा कर रहे थे। बच्चा हृदय रोग से पीड़ित था। आर्थिक रूप से दुर्बल माता-पिता असम सरकार द्वारा दिए जाने वाले मुफ्त इलाज का लाभ उठाने के लिए असम जा रहे थे। बच्चा सोया हुआ था। आँखें आधी खुली, आधी बंद थीं। उस मासूम चेहरे को देखकर किसी का भी दिल दर्द से भर सकता है। उस बच्चे के मुखमंडल से यह पता चल रहा था कि बच्चा कितना कमज़ोर है। अक्सर मुझे उनकी याद आती है। क्या बच्चा और उसके माता-पिता ठीक होने के बाद दोन्यी-पोलो एक्सप्रेस से लौटेंगे? इसी तरह एक बार एक व्यक्ति अपनी बेटी की शादी कराने के लिए उसे गुवाहाटी ले जा रहा था। 24-25 साल की लड़की बहुत सीधी साधी थी। वह सिसक रही थी, जिसे देखकर उसके पिता ने उसे डांटा कि मत रोओ। उन्होंने कहा- "इतनी बड़ी लड़की होकर रोती हो, क्या तुम्हें शर्म नहीं आती है।"

मैंने उसका हाथ धीरे से पकड़ते हुए कहा- 'क्यों रो रही हो?'

उसने जवाब दिया-'मेरी शादी हो जाएगी।'

मैंने थोड़ा अफ़सोस के साथ मुस्कुराया और कहा-'यह तो जीवन का एक नियम है कि लड़की को शादी करके दूसरे घर में जाना ही पड़ता है। यदि आपकी शादी नहीं होगी तो लोग आपके माता-पिता पर हंसेंगे।'

आंसुओं को अपने हाथों से पोछकर उसने उत्तर दिया-'मैडम, मैं इसलिए नहीं रो रही हूँ कि मेरी शादी होने वाली है, बल्कि मैं अपने लियोनार्डो के लिए रो रही हूं। वह मेरी जिंदगी है। मैं उसके बिना अपने जीवन की कल्पना नहीं कर सकती।'

यह सुनकर मैं चौंक पड़ी। माता-पिता अपनी लड़की की शादी उसके प्रेमी से दूर क्यों कर रहे हैं। मैंने उसके पिता की ओर देखा, उनका चेहरा उदासी से ढका हुआ था। उन्होंने कहा-'लियोनार्डो इसके कुत्ते का नाम है।'

'ओह! क्या वह लियोनार्डो को अपने साथ नहीं ले जा सकती? यदि ऐसा होता तो बेहतर होता।'

'उनकी शादी गुवाहाटी में बड़े धूमधाम से तय की गई है, अगर वह अपने साथ एक स्थानीय कुत्ता ले जाए तो कैसा लगेगा? सीधी-सादी लड़की यह नहीं समझती...'

इस दोन्यी पोलो एक्सप्रेस में मेरा इस तरह की बहुत सी घटनाओं से साबका हुआ है।

वह मेरी बातों को मंत्रमुग्ध होकर सुन रहा था, मानों उसे कोई सुनाने वाली मिल गयी हो। वह एकटक मेरी और हल्की मुस्कराहट के साथ देख रहा था, और पूछा-

'क्या आप साहित्यकार हैं?'

'मैं एक साहित्यकार हूं। आप कैसे जानते हो?'

'आपको कैसे पता चला कि मैं आर्मी से हूं?'

हम दोनों खूब हंसे।

मैंने कहा-'कोई अंधा आदमी भी आपको देखकर कहेगा कि आप सेना की किसी रेजिमेंट से हैं।'

'और कोई गूंगा व्यक्ति आपकी बात सुनेगा तो कहेगा कि आप कवि-साहित्यकार हैं।'

'कृपया मैं आपका नाम जान सकता हूँ।'

'स्मृतिशिखा। आपका?'

'अमन कुमार।'

'नाम, जात, पेशा, धर्म, शौक इन सबसे ऊपर हम इंसान हैं, है ना अमन जी? यदि कोई अपना परिचय एक इंसान के रूप में नहीं दे सकता, तो इस जीवन का महत्त्व ही क्या है?'

'सही कहा आपने, स्मृतिजी...'

'अमन जी, क्या आप कृपया मुझे किसी और दिन पैरा-ग्लाइडिंग के अपने अनुभव बताएँगे?

'ज़रूर स्मृतिजी, शायद हम भविष्य में एक दिन दोन्यी -पोलो एक्सप्रेस के किसी डिब्बे में जरूर मिलेंगे...'

'लेकिन इस वृद्ध महिला का क्या होगा अमन जी?'

'मैं भी यही सोच रहा हूँ स्मृति जी... 'माँ जी' का क्या होगा?'

अचानक बाहर से एक तेज़ हवा अंदर आयी, हम दोनों के जिस्मों को छूकर चली गई। एक अनजान उत्कंठा मेरे दिल में जगी, मैंने अमन जी की ओर देखा, वह हल्की मुस्कान मेरे दिल में जैसे दस्तक दे गयी हो। अपने अनुभवों को जानकर मैं माहौल को बदलना चाही। मैंने उनसे पूछा, 'क्या पैराशूट से उड़ना अच्छा लगता है?'

उन्होंने हँसते हुए कहा, 'हाँ... अच्छा लगता है...मेरे कर्तव्य मुझे आसमान की ओर खींचते हैं और धरती के प्रति मेरे प्रेम मुझे ज़मीन की ओर...।

निचली बर्थ की दोनों मिशनरी गहरी नींद में थीं। एक की गर्दन से क्रॉस लटक रहा था और दूसरी अपने आरामदायक गर्म कपड़ों को लपेटे चुपचाप सो रही थी। बीच वाली बर्थ में पांच वक्त नामाजी खर्राटे ले रहे थे। डिब्बे में एक और महिला यात्री थी, सखा-सिंदूर और मंगल सूत्र पहने एक खूबसूरत महिला। हो सकता है कि वह अभी तक किसी बच्चे की माँ नहीं बनी हो। वह अपने सपनों की दुनिया में खोई हुई थी। उनके पति साइड अपर बर्थ पर थे, और अपनी हल्की नींद में ही कभी-कभी खाँसकर अपनी जागृति का संकेत दे रहे थे। रेल के सफ़र में रात को अक्सर लोगों को सावधान रहना पड़ता है। और तो और इतनी खूबसूरत पत्नी साथ होने से सावधान रहना कर्त्तव्य बन जाता है। मोबाइल में व्यस्त अरुणाचल के दोनों युवक हेडफ़ोन निकाले बिना ही सो गए। या फिर उन्हें अभी नींद नहीं आ रही थी, इसीलिए आंख बंद करके गाना सुन रहे होंगे। बहुत देर नहीं हुई थी। गुवाहाटी-नाहरलगुन शताब्दी एक्सप्रेस की क्रॉसिंग के कारण हमें गहपुर स्टेशन पर आधे घंटे तक इंतजार करना पड़ा। क्या यात्रियों को इतनी नींद आ रही है? लोगों को सुखी नींद में देखकर मुझे अच्छा लगता है। दुर्बल शरीर वाली माँ जी गहरी निद्रा में थीं। अमन न जाने क्यों बड़बड़ाने लगा...ईश्वर अल्लाह तेरे नाम...सबको सन्मति दे भगवान...सीताराम...सीताराम। उकडू बनी सो रही माँ जी ने अपना आकार इस तरह खोल लिया, मानो डोरी की गांठ धीरे-धीरे खुल रही हो। उनका आकार लंबा हो जाने के साथ-साथ अमन और मैं करीब आ रहे थे। एक अजीब-सी हलचल मेरे शरीर में मैंने अनुभव किया। एक अनजाना शांति। हम दोनों एक दूसरे की ओर देखे और दोनों मुस्कुराये।

मैंने अमन से कहा, 'रोंगिया तक आपको सोने नहीं मिलेगा, क्या आपको नींद नहीं आएगी, अमन जी।'

'यह कोई गंभीर मामला नहीं है स्मृति जी। हमें बिना सोवे और बिना खाना खाए रहने की आदत है। हमारा पेशा ही ऐसा है। देखिये माँ जी कैसे बेख़ौफ़ होकर सो रही हैं।'

सचमुच, मैंने माँ जी की ओर देखा। क्या वह झुर्रीदार चेहरे और दुर्बल शरीर वाले किसी की मां हैं? क्या उसका अमन जैसा जवान बेटा है? या कोई विवाहित बेटी...? अगर आज अमन जी यात्रा नहीं कर रहे होते तो माँ जी का क्या होता?

तातीबहार, बेदेती आदि पार करने के बाद बोरगांग रेलवे स्टेशन आया। अगला विश्वनाथ चारियाली मेरी मंजिल थी। मैं अपनी जगह पर पहुंचने ही वाली थी। मुझे कुछ मिनटों के बाद अमन और माँ जी को छोड़ना होगा। मुझे खालीपन महसूस हुआ। मेरे सीने के अंदर का खामोश पक्षी फिर से बेचैन हरकतें करने लगा। मैं गुजरते समय को संजोने के लिए उत्सुक थी, जो कभी संभव नहीं था। यात्रा के दौरान अमन जैसा सहयात्री मिलना सौभाग्य की बात है। सच कहूँ तो हर सफ़र में हमें अमन जैसे कितने मुसाफ़िर मिलते हैं। दरअसल, दुनिया में अभी भी इंसानियत कायम है क्योंकि अमन जैसे कुछ लोग हैं। अमन को सहयात्री के रूप में पाकर बहुत अच्छा लगा। हमारी दोस्ती बहुत ही कम समय में परवान चढ़ गई, लेकिन अब मैं डिब्बे के अन्य यात्रियों जैसे दोनों मिशनरी, सखा-सिंदूर पहनने वाली महिला और उसके पति, मोबाइल वाले अरुणाचली दोनों लड़कों के बीच अमन को छोड़ दूंगी। मेरा मन नहीं मान रहा था, बेशक बूढ़ी माँजी भी अमन के साथ थीं। एक विरह चीख के साथ रेलगाड़ी रूक गई। मैं नीचे उतरने में व्यस्त हो गयी। अमन भी खड़ा हो गया। माँ जी जाग नहीं रही थी। अमन ने सीट के नीचे रखा मेरा बैग निकाला, मैंने अपने स्वेटर के ऊपर जिस शॉल को पहना हुआ था, उससे माँ जी के शरीर को ढँक दिया। माँ जी गहरी नींद में थीं। फिर भी मैंने उसके सिर पर धीरे से हाथ फेरते हुए कहा-

'माँ, मुझे उतरना है। अलविदा।'

अमन भी मेरे साथ उतर गया। उसने बैग रेलगाड़ी से नीचे रख दिया और कहा – 'आपसे मिलकर खुशी हुई स्मृति जी। आपको हमेशा याद करेंगे। चिंता मत करो, मैं रात को रोटी खाता हूँ। चावल का पैकेट माँ जी के लिए रखा हुआ है। जैसे ही वह उठेंगी हम अपना रात्रि भोजन एक साथ करेंगे।'

'ओह। सच में आप बहुत अच्छे हैं अमन जी... अपना ख्याल रखना....रेलगाड़ी में भी और पैराशूट में भी...शुभ यात्रा।'

'जरूर स्मृति जी... आप भी बहुत अच्छी हैं... आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।'

रेलगाड़ी ने फिर से विरह गीत सुनाया...अमन डिब्बे के दरवाज़े पर खड़े होकर हाथ हिलाते रहे। रेल गीत शुरू हो गया। दोन्यी-पोलो एक्सप्रेस 15618 अपनी स्वाभाविक गति से आगे बढ़ी। अमन धीरे-धीरे मेरी आंखों से ओझल हो गया।

अंतिम समय में मैं उसकी ओर देखकर हाथ हिलायी थी, और चिल्लाकर कही थी-

'आपका यात्रा मंगलमय हो। और मन ही मन रेलगाड़ी को भी कह रही थी कि बाकी सभी यात्रियों के साथ अमन और माँ जी को भी सुरक्षित ले जाओ...'

रेलगाड़ी ने भी जवाब दिया...

'अलविदा स्मृति, फिर मिलेंगे...'

वह लयबद्ध गति से चली गई... नजरों से ओझल होने वाली वह और कोई नहीं.... बल्कि प्यारी दोन्यी पोलो एक्सप्रेस थी, जो अपने अंदर एक रहस्यमयी दुनिया लेकर तेज गति से गंतव्य की ओर दौड़ती है। कौन जानता है कि कितने विलाप, अनेक अनकहे दुःख, आँसू और हँसी वह अपने भीतर छुपाकर रखती है।

मैं सोच ही रही थी कि रेलगाड़ी बहुत दूर पहुंच गई। रेलगीत अब भी मंद-मंद सुनाई दे रही थी। प्लेटफार्म अगली रेलगाड़ी की प्रतीक्षा में एक नम्र और शांत आज्ञाकारी लड़की की तरह खामोश था। रेलगीत अब भी मेरे मन में गूंज रहा है...अभी भी यह सफर जारी है। (चलते-चलते..यूँ ही कोई...मिल गया था यूँ ही कोई...सरे राह...चलते-चलते....)

- 'जगबंधु फटसति': असमीया लोकोक्ति।
- 'रेल ओ रेल दीघे लेलपेल': रेलगाड़ी की लंबाई को वर्णन करती हुई एक लोकोक्ति।
- 'प्रथम नोहोय द्वितीयो नोहोय तृतीया श्रेनिर जात्री आमी जिबोन रेलोर डोबाट': डॉ. भूपेन हाजरिका द्वारा रचित गीत।

*(**लेखकीय परिचय :** अरुणाचल प्रदेश की सुपरिचित कथाकार अजन्ता अरुणाचल प्रदेश लिटरेरी सोसाइटी की संस्थापक सदस्या रही हैं और आप वर्तमान में अरुणाचल प्रदेश सरकार में अपनी सेवाएँ दे रही हैं। मोबा:8787482378, ई-मेल : ajantadotc@yahoo.in; / **अनुवादक परिचय:** माधुर्ज्य कमल हाजरिका वर्तमान में राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में शोधार्थी हैं। मोबा: 9401690026, ई-मेल : madhurjyahazarika3@gmail.com)*